निरन्तर एकांत में रहकर अपनी आत्मिक स्मृति बनाओ
बाप समान अव्यक्त होकर बेहद के वानप्रस्थी कहलाओ
भाग्य विधाता गा रहे हैं हम बच्चों के भाग्य का गुणगान
मनुष्य से देवता बनने वाली तुम आत्माएं हो बड़ी महान
बाप के संग हुआ हम आत्माओं का भी दिव्य अवतरण
एकांतवासी होकर करते रहो ईश्वरीय ज्ञान का सुमिरण
व्यर्थ की बातों में अमूल्य समय बिलकुल नहीं गँवाओ
राशि अनुसार बाप समान विश्व कल्याणकारी कहलाओ
बनकर बेहद के रहमदिल बना लो अपनी बुद्धि विशाल
कमजोर हुई आत्माओं को कर दो शक्तियों से

मालामाल
छोटी बातों में ना फंसना तुम हो स्वयं के भाग्य विधाता
व्यर्थ की गुड़ियों के खेल से बचना बाबा हमें सिखाता
ज्ञान सागर की लहरों में स्मृति स्वरूप बनकर लहराओ
भाग्य विधाता का सुमिरन कर उसकी यादों में समाओ
दुःख आने की नहीं है चिंता ये बाप की याद दिलाता है
दुःख धाम से ममत्व मिटाकर बाप के पास ले आता है
बाप के होकर बन गए हम सर्व खजानों के अधिकारी
गुलाब के फूल समान खिल गए हम मिटी उदासी सारी
विश्व सेवा के लिए अवतरित हुए ये रहता हमको याद

विश्व कल्याण के लिए हुए हम सर्व बन्धनों से आजाद
संकल्प बोल और कर्म से हम विश्व का कल्याण करते हैं
आने वाली हर आत्मा को हम ज्ञान के खजानों से भरते हैं
हम हैं सर्व श्रेष्ठ आत्माएं बाप के दिल तख्त पर ही रहते है
मिट्टी में पांव कभी ना रखना बाप दादा हमको कहते हैं
अपनी वानप्रस्थी अवस्था से हम ऐसा वातावरण बना रहे
सच्चे प्रेम सुख और शांति का अनुभव हम सबको करा रहे
ॐ शांति